अभ्यास पत्रक

पाठ –नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ

नाम :- .... कक्षा :- .... अवधि :- .... अनुक्रमांक :- .... प्राप्तांक :- ....

1. पद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"यहीं इस गली में बनती हैं
मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ ...
दुनिया की सारी गंदगी के बीच
दुनिया की सारी खुशबू
रचते रहते हैं हाथ"

1. कवि ने किस स्थान को 'मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ' बनाने वाला बताया है?

उत्तर - ....

2. 'गंदगी के बीच खुशबू रचना' किस विरोधाभास को दर्शाता है?

उत्तर - ....

3. इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कौन-सी सामाजिक सच्चाई को उजागर करता है?

उत्तर - ....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** कवि ने अगरबत्ती बनाने वालों के श्रम को सम्मान दिया है।
   कारण: उन्होंने उन श्रमिकों के हाथों को 'खुशबू रचते हुए हाथ' कहा है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** आधुनिक शहरों का विस्तार स्मृति और पहचान को बनाए रखता है।
   कारण: नए मकान बनने से पुराने निशान और रास्ते स्पष्ट बने रहते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: गलत

3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. कविता के रचनाकार कौन हैं?
   (क) केदारनाथ सिंह (ख) अरुण कमल (ग) नागार्जुन (घ) मंगलेश डबराल
7. कवि क्यों रास्ता भूल जाता है?
   (क) नए मकान देखकर (ख) पीपल का पेड़ देखकर
   (ग) लोगों से पूछकर (घ) घर बदल जाने से
8. किस वस्तु के निर्माण को 'खुशबू रचना' कहा गया है?
   (क) इत्र (ख) लवेंडर (ग) अगरबत्ती (घ) चंदन
9. कवि किन हाथों को 'खुशबू रचते हैं' कहता है?
   (क) मशीनों के (ख) मालिकों के (ग) मजदूरों के (घ) कलाकारों के

10. 'स्मृति का भरोसा नहीं' – कवि ने यह क्यों कहा है?

(क) लोग भूल जाते हैं

(ख) पुरानी बातें झूठी लगती हैं

(ग) नये मकान बन जाने से पहचान गुम हो जाती है

(घ) कवि की याददाश्त कमजोर है

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. कविता में कवि ने 'खुशबू' का प्रयोग किस प्रतीक के रूप में किया है?

उत्तर - ....

....

12. 'उभरी नसों वाले हाथ' और 'जूही की डाल से हाथ' किन्हें दर्शाते हैं?

उत्तर - ....

....

13. नए इलाकों में पुराने रास्ते क्यों पहचान में नहीं आते?

उत्तर - ....

....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. कविता में कवि ने 'अगरबत्ती बनाने वालों' के श्रम और जीवन की विडंबना को किस प्रकार चित्रित किया है?

उत्तर - ....

....

....

....

....

....

....

....

....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "सामाजिक श्रमिकों का योगदान और समाज की उपेक्षा" – विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - ....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. एक गंदी, संकरी गली को जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं।
2. यह दर्शाता है कि सबसे गंदी जगहों से भी सबसे सुंदर चीजें बन सकती हैं।
3. समाज जिन श्रमिकों को महत्व नहीं देता, वही समाज की सुगंध रचते हैं।
4. (क)
5. (घ)
6. (ख)
7. (क)
8. (ग)
9. (ग)
10. (ग)
11. 'खुशबू' यहाँ सुंदरता, श्रमफल और सांस्कृतिक सौंदर्य का प्रतीक है।
12. उभरी नसों वाले हाथ वृद्ध श्रमिकों के, और जूही की डाल से हाथ युवतियों के प्रतीक हैं।
13. रोज नए निर्माण और पुराने चिन्हों के मिट जाने से।
14. कविता में कवि अरुण कमल ने अगरबत्ती बनाने वाले श्रमिकों के श्रम, जीवन की कठिनाई और विडंबनाओं को उजागर किया है। वे संकरी गलियों, गंदगी, नालों और बदबूदार जगहों में काम करते हैं, जहाँ जीवन कठिन होता है। फिर भी वे ऐसी वस्तु बनाते हैं जो समाज में सुगंध फैलाती है – अगरबत्ती। कवि इन श्रमिकों के हाथों को 'खुशबू रचते हुए हाथ' कहकर उन्हें सम्मान देता है। जिन हाथों में घाव, नाखून टूटे हैं, वे ही समाज की पूजा-पाठ और उत्सवों के लिए आवश्यक वस्तु बनाते हैं। यह स्पष्ट करता है कि समाज जिन लोगों को सबसे निचला मानता है, वही उसकी आत्मा को सुगंधित करते हैं।
15. समाज के निर्माण और संचालन में श्रमिकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। वे पुल, मकान, सड़क, फैक्ट्रियाँ, वस्तुएँ और सेवाएँ देते हैं, जिन पर पूरी सभ्यता टिकी होती है। परंतु दुर्भाग्यवश, ये श्रमिक समाज की उपेक्षा का शिकार होते हैं। उनके श्रम को मान्यता नहीं मिलती, उनकी कार्य स्थितियाँ दयनीय होती हैं, और वे सामाजिक सम्मान से वंचित रहते हैं। कविता 'नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ' में कवि ने इन श्रमिकों की स्थिति को मार्मिक रूप से दर्शाया है। वे बदबू, गंदगी और तंग गलियों में रहकर ऐसी अगरबत्तियाँ बनाते हैं जिनसे घरों और मंदिरों में सुगंध फैलती है। यह विरोधाभास समाज के लिए एक दर्पण है – जो दिखाता है कि सुगंध उन्हीं हाथों से आती है जिन्हें हम गंदा समझते हैं। अतः आवश्यक है कि हम इन सामाजिक श्रमिकों को केवल सहानुभूति नहीं, सम्मान और अधिकार भी दें।

egyanarchive